

शोध विषय की सार्थकता यह है कि यह केवल आध्यात्मिक ही नहीं व्यावहारिक तथा सामाजिक भी है। यह मनुष्य की अभिरूचि, प्रवृत्ति और क्षमता के अनुकूल किसी तात्विक और सार्वभौमिक साधन को अपनाने का परामर्श भी देता है। यही शोध विषय की सार्थकता तत्त्व-मीमांसात्मक विचार मीमांसा को प्रमाणित करता है।

इस शोध विषय को अध्ययन के रूप में 'चार अध्यायों' में व्यक्त किया गया है, जिन्हें अनासक्ति दर्शन और विनोबा के जीवन के आध्यात्मिक, व्यावहारिक और सामाजिक विचारों की विवेचना की गई है। भगवद्गीता इस शोध का महत्वपूर्ण अंग है, इसी के विचारों के आधार पर आए अन्य विचारों और समझ को इस शोध में प्रस्तुत किया गया है।

प्रथम अध्याय में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि अनासक्ति का अर्थ पारम्परिक शास्त्रों में क्या बताया गया है। इसके अर्थ के स्पष्टीकरण में भगवद्-गीता के श्लोकों और गांधी जी के वचनों को मुख्य रूप से आधार बनाया गया है। इसी क्रम में, आसक्ति के स्वरूप की भी चर्चा आयी है और उसके निषेधरूप से भी अनासक्ति को समझाया गया है। लोक में इसका किस तरह का अनुपयुक्त अर्थ प्रचलित है इसको भी बताया गया है। आगे, इस अध्याय में यह बताया गया है कि अनासक्ति का ज्ञान, कर्म और भक्ति तीनों से आधारभूत रूप से जुड़ाव है। साथ ही, अनासक्ति योग के अनुसरण की महत्ता भी बतायी गयी है। उपसंहार में सुकरात व अरस्तु सरीखे कुछ पाश्चात्य विद्वानों के विचारों को रखते हुए अनासक्त निष्काम कर्म को नैतिकता के सिद्धान्त के रूप में स्थान दिया गया है।

द्वितीय अध्याय आचार्य विनोबा भावे के जीवन और विचारों पर केन्द्रित है। इसमें उनके बचपन, विद्यार्थी जीवन से लेकर गृह-त्याग, संत जीवन, महात्मा गांधी से मुलाकात, और तदोपरान्त विविध आश्रमों में उनके जीवन का और विनोबा द्वारा किए गये सफल कार्यों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय में विनोबा का जीवन दर्शन इसके अंतर्गत उनके अध्यात्मिक विचारों को सामने रखने का प्रयास किया गया है। उनका जीवन वृत्तान्त ही उनके जीवन दर्शन को परिभाषित करता है। जो कि द्वितीय अध्याय में वर्णित है। इस अध्याय में उनके दार्शनिक पहलुओं को उजागर किया गया है। यहाँ यह बताया गया है कि किस तरह विनोबा ने अपने व्याहारिक जीवन में दार्शनिक और अध्यात्मिक सिद्धान्तों को अपने विचारों और कार्यों द्वारा परिभाषित किया। हृदय की पवित्रता, समर्पण और सत्य के वरण से जीवन में अडिग रहते हुए उन्होंने जो योग किया वह अनासक्तयोग का एक अप्रतिम उदाहरण बना।

चतुर्थ अध्याय का शीर्षक है— आचार्य विनोबा भावे का अनासक्ति भाष्य। इस शीर्षक के अन्तर्गत विनोबा जी ने अनासक्ति योग को किस प्रकार से उपदिष्ट किया है इस पर प्रकाश डाला गया है। इसके लिए उनके प्रवचनों को आधार बनाया गया है। साथ ही, चूँकि उनके प्रवचन शून्य से नहीं उपजे थे इसलिए इस सन्दर्भ में पूर्व के अन्य विचारों को भी समझ कर बताया गया है। विनोबा के जीवन में अपनाये गये अनासक्ति कर्मों और विचारों का एक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत शोध की नवीनता यह है की वर्तमान समय में अनासक्ति के विचार को समझ पाना अत्यंत आवश्यक है। अनासक्ति सुख का अत्यंत प्रभावी मार्ग है। इस शोध का मूलतत्व अनासक्ति है। अनासक्ति का अर्थ और विनोबा द्वारा अनासक्ति का महत्त्व इस शोध में उल्लेखित किया गया है।

इसलिए इस शोध विषय के अंतर्गत मूल तत्व के रूप में जो सम्प्राप्ति हुई है उससे मुझे संतुष्टि मिली है क्योंकि अनासक्ति की अध्यात्मिक दृष्टि और विचार अत्यंत प्रभावी है जिन्हें जानकर किसी भी व्यक्ति के विचारों को एक नई दृष्टि प्राप्त होगी।

इस शोध कार्य को करने के उपरांत मुझे अपने विषय दर्शनशास्त्र के क्षेत्र में एक प्रभावी नवीनता प्राप्त हुई है। इस शोध से मुझे अनासक्ति दर्शन के भाव का सत्य ज्ञान प्राप्त हुआ है।

अतः मैं यह मानती हूँ और आशा करती हूँ की यह शोध समाज में अनासक्ति दर्शन और विनोबा के विचारों से अवगत कराने में सफलीभूत होगा।
